पश्चिमी सिंहभूम के गोइलकेरा की गृहलक्ष्मी एसएचजी दिल्ली में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

आजीविका डेस्क

दिल्ली के पूसा में देशभर के स्वयं सहायता समूहों के राष्ट्रीय पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत गोइलकेरा प्रखंड के कुल्ला गांव की गृहलक्ष्मी स्वयं सहायता समूह को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. अपने समूह की प्रतिनिधि के तौर पर अंजली प्रधान एवं सुरेखा प्रधान ने केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री नरेंद्र तोमर से सम्मान प्राप्त किया. राष्ट्रीय पुरस्कार के रूप में ग्रामीण विकास मंत्रालय की ओर से गृहलक्ष्मी स्वयं सहायता समूह को एक लाख रुपये का चेक, प्रमाण पत्र एवं मोमेंटों देकर सम्मानित किया गया. वहीं 24 चुनिंदा बेस्ट प्रैक्टिस की पुस्तिका में राज्य के तीन बेस्ट प्रैक्टिस को भी स्थान मिला. इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर एवं रामकृपाल यादव ने दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत देश के 24 चुनिंदा बेस्ट प्रैक्टिस को संग्रह कर एक पुस्तिका का विमोचन किया. इस बेस्ट प्रैक्टिस को देश के सभी राज्यों से जोड़ने की योजना है, ताकि अभिनव प्रयासों से गांव को विकास के पथ पर लाया जा सके. इस कार्यक्रम में केंद्रीय ग्रामीण विकास सचिव अमरजीत सिन्हा एवं डीएवाइ- एनआरएलएम के मिशन डायरेक्टर अटल डुल्लू समेत ग्रामीण विकास विभाग के कई अधिकारी एवं सभी राज्यों की स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्य उपस्थित थीं.

दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में गृहलक्ष्मी एसएचजी की सदस्य को सम्मानित करते केंद्रीय मंत्री.

झारखंड के तीन बेस्ट प्रैक्टिस

24 चुनिंदा बेस्ट प्रैक्टिस की पुस्तिका में झारखंड के तीन बेस्ट प्रैक्टिस को जगह मिली है. सामुदायिक पत्रकार, बीसी सखी एवं सखी मंडल के जरिए स्वच्छ भारत मिशन के अभिनव पहल को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा एवं प्रकाशित किया गया है. आजीविका मिशन का क्रियान्वयन ग्रामीण विकास विभाग की झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी कर रही है.

34 स्वयं सहायता समूह राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

एसएचजी को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करने का उद्देश्य सामुदायिक संस्थानों के उल्लेखनीय कार्यों को लोकप्रिय बनाना तथा गरीब समुदाय के सदस्यों के बीच गर्व की भावना का संचार करना है. सर्वश्रेष्ठ निष्पादन वाले एसएचजी तथा ग्राम संगठनों को पुरस्कार प्रदान करने की शुरुआत डीएवाइ-एनआरएलएम ने 2016-17 में शुरू की थी. आंकलन वर्ष 2017-18 के लिए 34 एसएचजी को डीएवाइ-एनआरएलएम के तहत राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. झारखंड की स्वयं सहायता समूह लगातार दूसरे साल भी सारे पैमाने पर खरा उतरते हुए राष्ट्रीय पुरस्कार की हकदार बनी हैं.

चयन का आधार

डीएवाइ-एनआरएलएम पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ निष्पादन करने वाले समुदाय आधारित संगठनों (स्वयं सहायता समूह तथा ग्राम संगठन) को एसआरएलएम से प्राप्त नामांकनों की जांच के बाद प्रदान किए जाते हैं. चयन के लिए एसएचजी के कार्यों जैसे- संस्थान व क्षमता निर्माण, वित्तीय समावेश, आजीविका, अभिसरण आदि का पहले आंकलन किया जाता है. इसके बाद पुरस्कार प्राप्ति के लिए एसआरएलएम द्वारा नामांकन किया जाता है. इस प्रकार प्राप्त आवेदनों की डीएवाइ-एनआरएलएम की राष्ट्रीय इकाई द्वारा जांच की जाती है तथा पुरस्कार पाने वालों की सूची तैयार की जाती है.

पश्चिमी सिंहभूम

बारकेला की पूर्णिमा एसएचजी की महिलाएं उपजा रहीं 15 क्विंटल धान

पंचायतनामा डेस्क

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत बारकेला गांव की पूर्णिमा एसएचजी की महिलाएं धान उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं. इससे इस गांव की महिलाएं न सिर्फ खुद समृद्ध हो रही हैं, बल्कि धान उत्पादन के मामले में राज्य को भी समृद्धि की ओर ले जा रही हैं. बारकेला गांव में हो रहे इस बदलाव की वाहक हैं सूर्यमणि बोयपाई. सूर्यमणि साल 2013 से पूर्णिमा स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं. धीरे-धीरे समूह की गतिविधियों में सक्रिय रहने लगीं. वर्तमान में सूर्यमणि अपनी समूह की कोषाध्यक्ष हैं. समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं में आत्मविश्वास जगा और कुछ करने का मन बनाया. इसको लेकर समूह में चर्चा हुई. समूह की महिला सदस्यों के बीच धान की खेती करने पर सहमति बनी. खेती करने के लिए जेएसएलपीएस की ओर से धान की उन्नत तकनीक श्रीविधि से खेती करने का प्रशिक्षण दिया गया. इसके साथ ही पोनोवीडर मशीन भी दी गयी. प्रशिक्षण मिलने के बाद समूह की दीदियां श्रीविधि तकनीक से खेती करने लगीं. इस विधि से खेती करने से उन्हें काफी फायदा हुआ. इससे समूह की दीदियों की आर्थिक स्थिति में भी पहले की अपेक्षा काफी सुधार होने लगा.

छह किलो बीज से 15 क्विंटल उत्पादन : महिला समूह की सदस्यों को जेएसएलपीएस की ओर से छह किलो धान का बीहन दिया गया था. इससे महिला किसानों को काफी अच्छी फसल मिली. महिला किसान सूर्यमणि कहती हैं कि छह किलो बीज लगा कर करीब 15 क्विंटल धान का उत्पादन किया गया. समूह की सदस्यों ने अपने-अपने खेतों में धान की खेती की.

बारकेला

अपने खेत में काम करतीं सूर्यमणि बोयपाई.

धान की खेती से खुशी : सूर्यमणि

महिला किसान सूर्यमणि बोयपाई कहती हैं कि जेएसएलपीएस के मार्गदर्शन में खेती-बारी कर महिलाओं का हौसला बढ़ा है. गांव में धान की परंपरागत खेती करनेवाले लोगों को भी उन्नत तकनीक श्रीविधि से खेती करने को समूह की सदस्य प्रेरित कर रही हैं. सूर्यमणि इसका पूरा श्रेय जेएसएलपीएस को देती हैं.

चुरगुई गांव की विनिता जैविक खेती से उपजाती हैं 10 क्विंटल धान

पंचायतनामा डेस्क

खूंटपानी प्रखंड के चुरगुई गांव की विनिता जामुदा भी सफल महिला किसान हैं. विनिता जैविक खेती कर रही हैं. धान की उन्नत तकनीक श्रीविधि से खेती कर विनिता ने पिछले साल करीब 10 क्विंटल धान का उत्पादन किया था. इससे न सिर्फ विनिता की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई, बल्कि अन्य ग्रामीण महिलाओं को उन्होंने श्रीविधि तकनीक से खेती करने के लिए प्रेरित भी किया. वर्ष 2013 में मसकल आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ कर विनिता समूह की गतिविधियों में सक्रिय रहने लगीं. विनिता के पास जमीन थी, लेकिन परंपरागत तरीके से खेती करने के कारण उपज अच्छी नहीं हो पा रही थी. इसी बीच गांव में आजीविका कृषक मित्र का चयन हुआ.

आजीविका कृषक मित्र ने विनिता को धान खेती की उन्नत तकनीक बताये. जैविक खाद व दवा के इस्तेमाल पर विशेष जोर दिया गया. परिणाम यह हुआ कि श्रीविधि तकनीक से धान की खेती करने के कारण विनिता को करीब 10 क्विंटन धान हुआ. पहले की अपेक्षा अप्रत्याशित बढ़ोतरी होने से विनिता की खुशी का ठिकाना नहीं था. समूह की सदस्य होने के कारण समूह से ऋण भी मिला और उस राशि का उपयोग किराना दुकान खोलने में किया. बेरोजगार विनिता के पति को भी रोजगार मिल गया. अब दोनों मिल कर करीब पांच से छह हजार रुपये की आमदनी कर रहे हैं.

दोपाई

आजीविका कृषक मित्र ने विनिता को बतायी नयी तकनीक.

समूह ने बढ़ाया हौसला : विनिता

सफल महिला किसान विनिता कहती हैं कि जेएसएलपीएस ने उन्हें एक नया जीवन दिया है. श्रीविधि तकनीक से खेती कर बेहतर उत्पादन ने समूह की महिलाओं में हौसला बढ़ाया है. विनिता कहती हैं कि पहले छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ रहती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं है. आत्मविश्वास बढ़ा व खुद अपने पैरों पर खड़ा होने के कारण घर-परिवार को बखूबी चला रही हैं. वह कहती हैं कि खुद तो वह नहीं पढ़ सकीं, लेकिन अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए प्रयासरत हैं.